प्रायद्वीपीय पठार

- संपूर्ण प्रायद्वीपीय भारत का क्षेत्रफल 7 लाख वर्ग km. , 1600 km हिन्द महासागर में प्रक्षेपित
- प्रायद्वीपीय भारत में कई छोटी-छोटी पर्वतीय श्रृंखलाएँ मिलती है। इन श्रृंखलाओं ने प्रायद्वीपीय भारत को कई छोटे-छोटे पठारों में विभक्त कर दिया है। इसलिए इसे पठारों का पठार भी कहा जाता है।
- प्रायद्वीपीय पठार प्राचीनतम गोंडवाना भूखंड का एक भाग है। इसके भूगर्भ में पेंजिया के तत्कालीन पदार्थ पाये जाते हैं।
- प्रायद्वीपीय भारत के उच्चावच और भूदृश्य का अध्ययन दो शीर्षकों में किया जा सकता है -

(A) प्रायद्वीपीय भारत के पर्वत

1. पश्चिमी घाट
2. पूर्वी घाट
3. अरावली पर्वत
4. सतपुड़ा पर्वत
5. विंध्यन पर्वत
6. राजमहल की पहाड़ी
7. गारो, खासी, जयंतिया

(B) प्रायद्वीपीय भारत के पठार

1. दक्कन का पठार
   - (i) महाराष्ट्र का पठार, (ii) विदर्भ का पठार — महाराष्ट्र का पठार
   - (iii) तेलंगाना का पठार, (iv) रॉयलसीमा का पठार — आंध्रप्रदेश का पठार
   - (v) बंगलौर का पठार, (vi) मैसूर का पठार — कर्नाटक का पठार
   - (vii) कोयम्बटूर का पठार — तमिलनाडु का पठार
2. काठियावाड़ का पठार
3. उत्तर का पठार
   - (i) मारवाड़ का पठार, (ii) मेवाड़ ,, ,, (iii) मालवा ,, (iv) बुंदेलखंड ,, — मध्यवर्ती पठार
   - (v) बस्तर का पठार, (vi) बघेलखंड ,, ,, (vii) दण्डकारण्य ,, ,, (viii) छोटानागपुर ,, ,, (ix) मेघालय ,, ,, — पूर्वी पठार

1. पश्चिमी घाट

- प्रायद्वीपीय भारत के प० किनारे पर अरब सागर तट के समानांतर स्थित
- उत्तर में ताप्ती के मुहाना से द० में कन्याकुमारी तक
- कुल लम्बाई 1200 km, औसत ऊँचाई - 915 m.
- यह उत्तर में कम चौड़ा व द० में अधिक चौड़ा
→ 16°N से ताप्ती नदी तक - कैस्पन - प०घाट की - सह्याद्रि
  - सबसे ऊँची चोटी कालसुबाई (1646)

- लावा उद्गार का प्रमाण
- थाल घाट & भोर घाट दर्रा
- गोदावरी & कृष्णा नदी का उद्गम स्थान
• ताप्ती & गोदावरी के बीच सतमाला & अजंता पर्वत श्रेणी
• गोदावरी & भीमा नदी के बीच बालाघाट पर्वत
• भीमा & कृष्णा नदी —— महादेव पर्वत

→ 16° N से नीलगिरी पहाड़ी तक स्थित प० घाट की ऊँचाई बहुत अधिक है। इसका प० ढाल तीव्र जबकि पूर्वी ढाल मंद है।
• इस क्षेत्र की सबसे ऊँची चोटी — (कुद्रेमुख) (1892m)

→ नीलगिरी के पास प० घाट & पूर्वी घाट मिलकर एक गाँठ का निर्माण करते हैं।
• नीलगिरी को पूर्वी घाट का दक्षिणी विस्तार माना जाता है।
• इसकी सबसे ऊँची चोटी — (दोदाबेटा) (2636)
• ऊटी पर्वतीय नगर —— नीलगिरी पर
• आर्कियन युग के चट्टानों से निर्मित — नीलगिरी।

→ नीलगिरी के द० में अन्नामलाई, कार्डमम, नागरकोयल & स्वामी विवेकानंद रॉक इसे सम्मिलित रूप से दक्षिण की पहाड़ी कहते हैं।
• अन्नामलाई की सबसे ऊँची चोटी - (अनाईमुडी) (2695)
• अन्नामलाई पर्वत के उ०पू० में पालनी पहाड़ी जिसपर कोडाईकनाल पर्वतीय नगर
• नीलगिरी & अन्नामलाई के बीच पाल घाट दर्रा
• अन्नामलाई & कार्डमम के बीच सेनकोटा दर्रा

2. पूर्वी घाट

- प्रायद्वीपीय भारत के पूर्वी तट के समानांतर तट से 200 से 400 km दूर स्थित है।
- इस पर्वत का निर्माण कुडप्पा संरचना से हुआ है।
- यह विखंडित श्रृंखला है — महानदी, गोदावरी, कृष्णा ——
- औसत ऊँचाई 900 m.
- उड़ीसा में अवस्थित सम्मिलित पर्वतीय श्रृंखला को मालियास कहलाता है।
- सबसे ऊँची चोटी — महेन्द्रगिरी (1501)
- कृष्णा नदी से पेन्नार नदी के मध्य स्थित पूर्वी घाट को मध्यवर्ती श्रृंखला कहते हैं — इसमें नल्लामलाई, वेलीकोंडा, पालकोंडा श्रृंखला प्रमुख है।
- पूर्वी घाट पर्वत को तमिलनाडु में जावदी, गिंजी, शिवराय की पहाड़ी, पंचमलाई पहाड़ी के नाम से जानते हैं।
- शिवराय की पहाड़ी को द० भारत का छोटानागपुर कहलाता है।
- पूर्वी घाट और प० घाट कहाँ-कहाँ जुड़े हुए हैं —
• मुम्बई & हैदराबाद के बीच - हरिश्चन्द्र पर्वत & बालाघाट
• बंगलौर के पास — बाबा बुदन की पहाड़ी & शेवराय की पहाड़ी से

3. अरावली पर्वत

- यह पर्वत राजस्थान में द०प० से उ०पू० दिशा में अवस्थित है।
- इसका विस्तार गुजरात से दिल्ली तक
- हिमालय & अरावली पर्वत के बीच – अंबाला गैप
- सबसे ऊँची चोटी – (गुरु शिखर) (1722) जो राजस्थान के सिरोही जिला में माउंट आबु के पास अवस्थित है।
- लम्बाई 800 km, औसत ऊँचाई 700-900 m.
- दर्रा – पीपलीघाट, देबुर
- इसके गर्भ में कई खनिज पाये जाते हैं – खनिजों का अजायबघर
- अपरदन & अनुक्षरण के कारण – विखंडित हो चुका है लेकिन द०प० भाग की ऊँचाई आज भी पर्याप्त है।

4. सतपुड़ा पर्वत

- नर्मदा & ताप्ती भ्रंश घाटी के बीच स्थित ब्लॉक पर्वत
- औसत ऊँचाई 900-1100 m.
- सबसे ऊँची चोटी – (धूपगढ़) (1350) – सतपुड़ा का
- सतपुड़ा के पूरब में महादेव, मैकाल, रामगढ़ & राजमहल की पहाड़ी अवस्थित
- मैकाल की सबसे ऊँची चोटी – (अमरकंटक) (1127)
- मैकाल पर पंचमढ़ी पर्वतीय नगर अवस्थित
- सतपुड़ा पर्वत के समानांतर महाराष्ट्र के औरंगाबाद में अजंता की पहाड़ी & नागपुर में ग्वाली की पहाड़ी अवस्थित है।
- लम्बाई 1120 km.
- सतपुड़ा के ऊपरी भाग में लावा निक्षेप का प्रमाण और नीचले भाग में आर्कियन युग की चट्टान.

5. विंध्यन पर्वत

- नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित प्रायद्वीपीय भारत की उत्तरी सीमा का निर्माण
- औसत ऊँचाई 500-700 m.
- इसकी उत्तरी ढाल भ्रंशन क्रिया से बनी है जिसके कारण उत्तरी ढाल तीव्र है जबकि द० ढाल मंद है।
- इसका विस्तार गुजरात से बिहार के गंगा नदी तक
- प० से पू० → विंध्यन पर्वत, भारनेर पर्वत, कैमुर की पहाड़ी, रावर की पहाड़ी, खड़गपुर की पहाड़ी के नाम से जाने जाते हैं।
- इसके नीचले भाग में लावा का निक्षेप जबकि पूर्वी भाग में चूनापत्थर की संरचना पायी जाती है।
- धारवाड़ & कुडप्पा के बाद भारत की सबसे प्राचीन संरचना है। यह पर्याप्त अपरदित हो चुका है।

6. राजमहल की पहाड़ी

- बिहार और झारखंड के सीमा पर भागलपुर के पास स्थित
- औसत ऊँचाई 500 - 700 m.
- इस पहाड़ी के कारण ही भागलपुर के पास गंगा नदी उत्तर की ओर मुड़ जाती है
- जुरासिक काल के लावा का प्रमाण
- बेसाल्टिक चट्टानों की प्रधानता

7. गारो - खासी - जयंतिया पहाड़ी

- मेघालय राज्य में प० से पू० क्रमश: फैला हुआ है।
- गारो अलग पहाड़ी के रूप में अवस्थित है जबकि खासी & जयंतिया आपस में मिला हुआ है।
- सबसे ऊँची चोटी - नोरकेक - गारो पर स्थित

प्रायद्वीपीय भारत के पठार

1. दक्कन का पठार

- विस्तार - महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक & तमिलनाडु
- महाराष्ट्र के प० भाग में इसे महाराष्ट्र का पठार, पूर्वी भाग — विदर्भ का पठार कहते हैं।
- AP के उत्तरी भाग - तेलंगाना का पठार, द० भाग — रायलसीमा का पठार
- कर्नाटक में इसे बंगलौर & मैसूर का पठार
- तमिलनाडु में — कोयम्बटूर का पठार
- महाराष्ट्र के पठार की औसत ऊँचाई 300 - 900 m इसी पठार पर अजंता की पहाड़ी स्थित
- विदर्भ के पठार — 700 - 900 m. - यहाँ लावा की पतली परत पायी जाती है।
- AP के पठार — 300 - 900 m.
- कर्नाटक के पठार — 600 - 900.
- संपूर्ण दक्कन का पठार का निर्माण क्रिटेशियस कल्प में हुए दरारी लावा उद्गार से
- इस पठार पर दरारीय लावा के निक्षेपण से बेसाल्टिक चट्टानों का निर्माण.
- कहीं-कहीं केन्द्रीय उद्गार होने से शंकु पहाड़ियाँ, क्रेटर, काल्डेरा का निर्माण.

2. काठियावाड़ का पठार

- गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र में स्थित
- अत्यंत कटा-फटा पठार
- लावा निक्षेप और चूनापत्थर का प्रमाण
- औसत ऊँचाई 200 - 400 m.
- इसी पठार पर शंकुनुमा गिर की पहाड़ी अवस्थित है।

3. मरुस्थली पठार

मारवाड़ का पठार — राजस्थान के जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर जिला में अवस्थित
- शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश का भूदृश्य प्रस्तुत करता है

(ii) मेवाड़ का पठार - राजस्थान के पूर्वी भाग में चित्तौड़, बाँसवाड़ा, उदयपुर जिला में
- औसत ऊँचाई 250-500 मी०
- यह पठार काफी ऊबड़-खाबड़ है।
- इसी पठार पर हल्दी घाटी का मैदान अवस्थित है।

(iii) मालवा का पठार - राजस्थान, ~~मध्यप्रदेश~~, व मध्यप्रदेश के सीमा पर अवस्थित
- इसे दक्कन के पठार का उत्तरी विस्तार माना जाता है।
- इस पठार पर लावा का निक्षेप
- औसत ऊँचाई 500-600 m.

(iv) बुंदेलखंड का पठार - विस्तार द०प० UP + उत्तरी MP के सीमा पर
- ललितपुर, झाँसी, गुना, विदिशा, ग्वालियर आदि जिला इसी पठार पर अवस्थित है।
- चंबल नदी इस पठार पर उत्खात भूमि का निर्माण
- औसत ऊँचाई - 500-600 m.

4. पूर्वी पठार

(i) बघेलखंड का पठार - छत्तीसगढ़ के उत्तर में अवस्थित
- बस्तर का पठार व बघेलखंड पठार के बीच महानदी की सहायक नदी रिहंद/सोन... नदी (उत्तर) सीमा का निर्माण करती है।
- औसत ऊँचाई — 700-900 मी०

(ii) बस्तर का पठार - छत्तीसगढ़ के दक्षिण में अवस्थित
- औसत ऊँचाई — 500-700 मी०
- बस्तर के पठार पर ही दण्डकारण्य क्षेत्र अवस्थित है जो भारत का सबसे ऊबड़-खाबड़ क्षेत्र है।

(iii) छोटानागपुर का पठार
- विस्तार - झारखंड, WB, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ में,
- इस पठार पर ग्रेनाइट और नीस चट्टानों की प्रधानता.
- औसत ऊँचाई 700-900 मी०
- इस पठार का प० भाग सर्वाधिक ऊँचा है, जिसे पाट का पठार कहते हैं।
इस पर नेतरहाट की पहाड़ी मोनेडनॉक का उदाहरण है।
- पाट के पठार के पूरब में राँची और हजारीबाग का पठार अवस्थित है।
- इन दोनों के बीच दामोदर नदी सीमा बनाते हुए भ्रंशघाटी में प्रवाहित होती है।
- अधिकतम ऊँचाई पारसनाथ की पहाड़ी 1365 m है।
- इसके उ.पू० भाग में कोडरमा का पठार है।
- हजारीबाग व कोडरमा पठार के मध्य कोडरमा की घाटी और चतरा की घाटी अवस्थित है।

(iv) मेघालय का पठार
- मेघालय राज्य में अवस्थित.
- प्रायद्वीपीय पठार का पूर्वी भाग — ग्रेनाइट व नीस से निर्मित.

- राजमहल ट्रैप के निर्माण के समय यह पठार प्रायद्वीपीय पठार से अलग हो गया।

✓ आसीय पठारों में मेघालय पठार की ऊँचाई सर्वाधिक है।

- औसत ऊँचाई - 700-900 m.
- इसी पठार पर गारो, खासी जयंतिया तीन शंकु पहाड़ी अवस्थित है।